धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अक्तूबर - 2010

* श्राद्धों का महत्व
* आत्म अन्धकार की सीमा
* सत्य धर्म बोध उत्सव
* एक पत्र
* कैसे बनी यह दुनियां
* शुभ संग्राम

श्राद्धों का महत्व

आज कल श्राद्ध के दिन चल रहे हैं। ऐसा मिथ्या विश्वास है कि हमारे पितृ अर्थात बजुरग धरती पर मंडराते हैं, जब श्राद्ध अर्थात ब्राह्मण वर्ग को अच्छे अच्छे भोजनों से निवाजा जाता है, तो उनको तृप्ति मिलती है और वह अपने इस संसार के वशंज जनों को अपना आर्शीवाद देते है।

इस दुनियां में जीवित रहते हुए, जो माता पिता तिरस्कार सहते रहे, अच्छे भोजन, कपड़े को भी तरसते रहे और नालायक सन्तान यह भूली रही कि जिन माता पिता ने जन्म देकर यह दुनियां दिखाई, अत्यन्त कष्ट सहकर पालन पोषण किया, शिक्षा दिलवाई, आप अभावों में जिए, परन्तु बच्चों की उचित, अनुचित इच्छाएं पूरी की, उसके इवज़ में वह साधारण सम्मान के हकदार भी नहीं समझे गए। माता पिता बोझ लगने लगे बच्चों के लिए हर सहूलतें, परन्तु मां बाप की ऐनक बनवाना भी भारी पड़ने लगा। मां बाप बच्चों के साथ बात करने, समय बिताने को तरसते रहे, माता पिता के ऋण से तो कोई बच्चा मुक्त हो ही नहीं सकता, परन्तु अब यह 15 दिन में केवल दिखाने का श्राद्ध करके बच्चे सन्तुष्ट हो जाएं तो कितनी शर्म की बात है।

बच्चे की एक एक क्रिया से माता पिता बलिहारी जाते हैं, जब वह आवाज़ निकालता है, दांत निकालता है पहला कदम उठाता है, तो माता पिता का प्यार छलक छलक जाता है परन्तु अकसर माता पिता बच्चों के स्पर्श को भी तरस जाते हैं, जिस सम्मान के माता पिता जीते जी अधिकारी थे, वह उन्हें क्यों नहीं मिलता, वह एकांत में निराशा के शिकार होकर इस दुनियां से चले गए, फिर अब यह दिखावा क्यों? परलोक से यह देखकर अवश्य उनके मन मे आता होगा कि हम पहले ही मर जाते, तो कुछ दिन पहले ही हमें सम्मान मिलता। माता पिता ने जिन बच्चों को ही अपना संसार माना था, उनका संसार श्राद्ध तक ही सिमट कर क्यों रह गया।

यहां तक ही नहीं माता पिता के जल्दी मरने की कामना भी होती है, कहने को यह बात असम्भव लगती है, परन्तु इसकी उदाहरणें हर तीसरे घर मे मिल सकती हैं।

जो बच्चे माता पिता की पल भर भी दूरी सहन नहीं कर सकते थे, मां का हाथ थामकर ही अपनी सुरक्षा समझते थे, वह माता पिता बच्चों से बात करने को तरस जाते हैं। फिर मरनोपरान्त यह कैसे श्राद्ध!

वह माता पिता बहुत खुशकिस्मत हैं जिनके बच्चे इस दुनियां में ही उन्हें पूजते हैं, उनकी सेवा करते हैं, उनके साथ समय बिताते हैं, वह मरने के बाद श्राद्ध न भी करें तो माता पिता उन्हें आर्शीवाद की बरसात करते ही रहेंगे।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 23 अंक 10

अक्तूबर - 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

आत्म अन्धकार की सीमा

मनुष्य सर्वश्रेष्ट प्राणी है, क्योंकि वह बुद्धिजीवी है। बुद्धि के विकास ने सांईसदान पैदा किए हैं। जिन्होंने मनुष्य के लिए नई रोशनी, नया ज्ञान और नई बरकतें पैदा की है और करते रहेंगे। इन बरकतों के द्वारा मनुष्य अपना और अपने नीचे के जगतों का विकास करता रहा है। बुद्धि शक्ति मनुष्य के हृदय की भावनाओं के हाथ में एक औज़ार है। उच्च भावों के अधीन बुद्धि शक्ति महान बरकत है। नीच भावों के हाथ में वह शैतानियत की मां बन जाती है।

मनुष्य सुखों का आशिक है। भिन्न भिन्न सुखों का अनुरागी है। सुख अनुराग अन्धेरा पैदा करते हैं। हानि, हित, लाभ, नुकसान की दुनियां लोप हो जाती है। सारी अक्ल मारी जाती है। सुख अपनी चाट के द्वारा जल्दी अन्धेरा पैदा करके, मनुष्य को अपना तरफ़दार, पक्षपाती और वकील बना लेता है। सुख अन्धेरा पैदा करके मनुष्य को अपना लालसी बनाकर, उसकी उल्टी हष्टि बना देते है। उसे अन्धेरे और मिथ्या में रखते हैं। सुखों को अति भयानक चाट की खुमारीं में उसका सारा खून चूस चूस कर उसका पूर्ण विनाश कर देते हैं - परन्तु मनुष्य को चतुर, चलाक और बुद्धिमान होकर दुनियां के सब पतनों का तैराक होकर भी उसकी उपरोक्त सच्चाईयों का पता नहीं लगता। वह अपने आपको "मैं ठीक हूँ" ही देखता और सोचता रहता है।

नीच सुखों का अन्धेरा अक्ल पर पर्दा डाल देता है, और वह उच्च बरकतों को लात मारकर खुश रहता है। इस सच्चाई की कुछ ठोस उदाहरणें इस प्रकार हैं।

कोई 100 वर्ष के लगभग की बात है कि सरकार ने भठिंडा के पास कल्याण आदि गावों के लिए पानी की छोटी नहर बनाकर उस पर पुल आदि बनवा कर चालू कर दी। कुछ साल रेतीले खेतों में खूब गन्ना, कपास, गाजरें और अन्य फसलें हुई। खुशहाली आने लगी, परन्तु कितने ही गावों ने मिलकर सरकार को यह प्रार्थना पत्र भेजा कि हमें नहर का पानी नहीं चाहिए। हमने पानी का टैक्स नहीं देना। यह नहर बन्द कर दी जाए, जो पुलों आदि पर खर्च हुआ था, वह व्यर्थ गया। इसका परिणाम यह हुआ कि फसलें घट गई, गरीबी बढ़ती गई, ज़मीने रेतीले टिब्बे वा रेगिस्तान बन गई। अन्धेरी आने के लिए यह इलाका मशहूर हो गया। खेतों में काम करने के लिए इतनी गर्मी होती कि मौतें होने लगी। फिर 50 - 60 वर्ष बाद आज़ादी आने पर लोगों ने मिन्नतें करके फिर से पानी का

चैनल बड़ी ही मुश्किल से चालू करवाया और इलाका आज तक बैकवरड घोषित हुआ है।

फिर सरकार बहुत वर्ष पहले 5 गावों को कहा कि मिलकर 100 रू० इकट्ठे करो और जमा करवाओ तो तुम्हारे लिए सरकारी स्कूल खोल दिया जाएगा। गावों के नम्बरदारों ने 100 रू० इकट्ठे कर लिए, परन्तु अन्धकार वासी, ग्रामीणों ने मिलकर कहा कि हमने स्कूल से क्या लेना है उस पैसे से शराब का ठेका खोल दिया। नम्बरदार कचहरियों में जाते, पढ़े लिखे लोगों को भी देखते परन्तु फिर भी उन्हें अक्ल न आई और स्कूल के स्थान पर ठेका खोल दिया और 60-70 वर्ष के बाद आज़ादी आने पर वहां स्कूल खोला गया।

भटिंडा में भुच्चो मण्डी, नथाना तहसील, कल्याण, कोठागुरू, भगता भाई, थराज, बाघपुराना आदि में नई सड़क बनाई ।

स्कूलों के मास्टर गावों में जाते, शिक्षा प्राप्ति के लाभ बताते कि शिक्षा मनुष्य का तीसरा नेत्र है, इससे बड़ी बरकतें आती हैं, परन्तु गांव वाले शिक्षा प्राप्ति को बुरा समझते, विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा प्राप्ति को तो बहुत ही बुरा समझते।

प्लेग, महामारियां फैलती, सरकार डाक्टर भेजती, टीके और दवाईयां भेजती, परन्तु लोग छुप जाते कि टीका नहीं लगवाना।

गाड़ियां शुरू में खाली जाती, लोग समझते कि लोगों को रेलों में भरकर समुन्द्र में फैंकने के लिए यह बनाई हैं।

मनुष्य की समझ सोच अपने भावों के हाथों बिल्कुल अधूरी है। मनुष्य अपने हित और लाभ को देखने में असमर्थ हो जाता है। अपनी हानि वा विनाश में ही खुश रहता है।

मानवता का महा सौभाग्य कि परम पू० भगवान देवात्मा का विकास के क्रम में आर्विभाव हुआ। वह सत्य और शुभ के महा प्रबल अनुराग को लेकर आए हैं। सर्व्वोच्य रूहानी रोशनी और तेज विकसित हुआ है। उन्होंने अन्धकार, मिथ्या वा पापों में ग्रस्त होकर रूहों को मरते देखा है। उन्होंने दुखों की शिकार रूहों को बचाने का महा ब्रत धारण किया, अद्धितीय मिशन बनाया। उन्होंने घोर दुख, उत्पीड़न, अज़ाब, तसीहे सह सहकर मरती रूहों को बचाने का अन्दोलन आरम्भ किया है। मानवता के हित की धारा बहाई है, जिससे सैंकडों और हज़ारों, दुर्बल, अति बन्धुए, महा पापी और अति कृपा-पात्र मनुष्यों को बचा बचा कर हितकर जीव बनाया है। जिसको देखकर मानवता अचम्भित हो गई । भेड़िए मनुष्यों को गाए जैसा हितकर जीव बना दिया। भक्षकों को रक्षक बना दिया। कबर में से निकालकर पापियों को सदा के लिए सेवाकारी वा परोपकारी बना दिया। गरीबों, मोहताजों को अफसरों के ओहदों पर सुशोभित होने के योग्य बना दिया और तंगदस्ती से निजात दिला दी। सम्बन्धों में जो नर्क था, उसे खत्म कर दिया। घरों में परस्पर सेवा, शुक्रगुज़ारी और सत्कार की गंगा बहा दी। स्वार्थ वा दुनियां परस्ती से मनुष्यों को निकालकर परसेवा में लगने के फख़र से नवाजा। आत्मा और धर्म का ज्ञान देकर घोर अन्धेरे से निकाला। योग्य जनों को आत्मा की सोझी, मुख्य लक्ष्य की सोझी बख़्शी है।

तात्पर्य यह कि परम पू० भगवान देवात्मा ने मनुष्य के जीवन के सारे और सर्व्वोच्च पक्षों की अवश्यकता की पूर्ति के लिए अद्वितीय शिक्षा, संगत और कारज के भरपूर समान अता किए हैं। योग्य और अधिकारी, रूहानी कंगाल, रंकों को बादशाह बनाया है। यह हित धारा, अन्धेरी और तुफान की तरह स्थूल है जो देखी वा अनुभव की जा सकती है।

परन्तु महा शोक और दुख की बात है कि सुख अनुरागों की गूढ़ खुमारी मनुष्य को इस धारा की प्रकृत महिमा को देखने ही नहीं देती और इससे लाभान्वित होना तो दूर की बात है। सारी दुनियां पर गहरा रूहानी अन्धेरा छाया हुआ है। विज्ञान मूलक कसौटियों, तोल तोल कर माप माप कर, परख़ परख कर देखने से ही पता लग सकता है कि भगवान देवात्म जैसा और कोई अस्तित्व नहीं। उनके महा ब्रत और कारज जैसा कोई कारज नहीं। उनकी आत्मा के सम्बन्ध में विज्ञान मूलक शिक्षा जैसी कोई शिक्षा नहीं और उनके द्वारा हो रही चारों जगतों पर हित की बारिश और कहीं नहीं होती। मानव जीवन की सब पक्षों में सच्ची सफलता की पूर्ण सामग्री के समान यहां वर्तमान है, परन्तु सुखों के अन्धकार में मनुष्यों को यह नज़र नहीं आता। उसके लिए निचले स्तर के सुख ही प्रधान हैं। उनमें ही वह लीन रहता है। धन कमाना, उसके द्वारा सुख स्वाद पाना, मान सम्मान, पद पोज़ीशन, बड़े-बड़े सुख सामानों से सुसज्जित ग्रह, बंगले, अधिक से अधिक सुन्दर, मंहगी कारें, सन्तान और उसके सुख, इन सब की प्राप्ति ही मनुष्य को असल प्राप्ति लगती है। जीवन की जीत लगती है, इससे ऊंचा, कुछ परम अवश्यक काम भी है, उस तक उसकी नज़र ही नहीं जाती।

सबसे बढ़कर हैरानी की बात है, कि जिस परिवार के मुखिया पर या उसके परिवार पर जो परम पू० भगवान देवात्मा का अद्वितीय कारज हुआ है, उसकी काया कल्प हुई है, अन्तों का हित हुआ है, मोटे पापों, नशों और अन्य अति भयानक बुराईयों, जिनसे वह नंग, कंगाल और बुरी तरह बर्बाद हो रहा था, घर परिवार की हालत तरस योग्य थी, सेहत तबाह हो रही थी, डाक्टर जबाब दे गए, कबरों में पहुंचने के करीब थे, उनको नया जीवन मिला, वह अमीर बने, इज्ज़तदार बने, घरों का नर्क और कलेश दूर हुआ, बदी गई, नेकी आई। उच्च और ठोस सुधार हुआ, अनपढ़ता गई, शिक्षा आई, दीन दुनियां की सब बरकतें खूब प्राप्त हुई, उजाड़ घरों में बहार आई, वह बड़े सौभाग्यवान घराने भी मुखिया के बाद, धन, जायदाद, मान इज्ज़त, मर्तबा, विषय वासनाओं के सौदागर फिर बन रहे है, जिस र्माग से परिवार बचा था, उसी राह पर फिर पड़ रहे हैं, इसी में जीवन की सफलता और प्राप्ति देखते हैं। कैसी घोर अन्धता है।

परम पू० भगवान देवात्मा देवत्व के सूर्य विकास क्रम ने आर्विभूत किए हैं। उन्होंने अपना खूने ज़िगर बहा बहाकर अद्धितीय हित धारा जारी की है जो मनुष्य के बंजर हृदय की, झाड़ियों, कंकरीट, पत्थर हटाकर उन्हें गुलोगुलज़ार बना रहे है। सरदार हरनाम सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी कोहारवाला, सिन्धी खानदान, श्रद्धेय श्रीमान मोहनदेव जी, कनल जी, काका जी, रुचलानी खानदान, सुच्चा सिंह जी, नेतराम जी, श्रीमान नौधसिंह जी डाक्टर इकबाल सिंह जी, सुरजन सिंह जी, स्वामी गोबिन्द राम जी, सरदार जमीयत सिंह जी, स. सरमुख सिंह जी रूप चन्द जी आदि पर तहलका मचा देने वाले परिवर्तन हुए। इन इन्सानों को कोयले से हीरा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सैंकड़ों हज़ारो के डूबते हुए जीवन बचे। इन सबके जीवन कोई कल्पित कहानियां नहीं ठोस मुहे बोलते, उच्च परिवर्तन हैं। वह बार बार पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि हम कुछ न होते, नष्ट भ्रष्ट हो जाते, परम पू० भगवान देवात्मा की अद्वितीय हित धारा ने बचा लिया।

महा शोक और भारी दुख और शर्म की बात है कि उक्त परिवारों मे से आज तारणहारे के मिशन

के लिए कोई जन आगे नहीं आया और आ रहा। शायद कोई ही सेवक या समाज का मैंबर हो। किले जो देवात्मा की शक्ति ने फतह किए थे, उन घरों के लिए भी लगभग निरर्थक हो गए। नये जनों का तो देखना अभी भी आसान नहीं।

कर्मचारियों के परिवार धन की प्राप्ति के पीछे जाकर फिर शराब ने पकड़ लिए और बर्बादियों के दरवाजे खोल दिए।,

मनुष्य की विद्या, सोच समझ, चतुराई केवल शारीरिक सीमा तक काम करके रह जाती है। उसकी नज़र, उसके सब भले बुरे की जड़ उसके जीवन के स्त्रोत उसके आत्मा तक नही जाती। मनुष्य के नीच सुख स्वादों, मान मर्तबों और दुनियावी सम्बन्धियों और लाभों ने घोर अन्धकार पैदा किया हुआ है। उसकी मत अक्ल, बुद्धि को मार रखा है। उसको सुअर की तरह गन्दगी से ही प्यार है।

इसके भयानक नतीजे आखिर भुगतने ही पड़ेंगें।

बलदेव सिंह

क्या आप जानते हैं

भारत की 70 फीसदी से अधिक जनसंख्या की आमदनी मात्र 20 रुपए रोज़ है, विश्व के 119 भूखे देशों में भारत का स्थान 96वां है।

यहां बाल मजदूरों की संख्या 6 करोड़ से भी अधिक है जिस में 80 प्रतिशत कुपोषण के शिकार हैं।

देश में 4 करोड़ हिंदू विधवाएं नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं।

विश्व के 40 प्रतिशत अशिक्षित अकेले भारत में हैं।

भारत में 17, 625 कालिज और 342 विश्वविद्यालय हैं।

देश में साल के 365 दिनों में लगभग 175 दिन छुट्टी के घोषित हैं जिन में 52 रविवार, 12 द्वितीय शनिवार, 25 सार्वजनिक अवकाश, 23 सार्वजनिक अवकाश, 30 अर्जित अवकाश, 23 निबंधित अवकाश, 12 मेडिकल, 12 उपार्जित अवकाश आदि शामिल हैं।

भारतीय न्यायालयों में करीब सवा 2 करोड़ मामले लंबित पड़े हैं जिन में हाईकोर्ट में 40 लाख तो सुप्रीम कोर्ट में 50 हजार मामले लंबित हैं।

यहां टी. बी. हर साल करीब साढ़े 3 लाख मरीजों की जान ले लेती है।

भारत में करीब 50 हजार लोग हर साल सांप के काटने से मर जाते हैं।

यहां आम नागरिकों की तुलना में सरकारी कर्मचारियों का वेतन लगभग 48 गुना है।

इस देश में पूजा स्थलों की संख्या 23, 98, 650 है जबकि अस्पताल-दवाखानों की संख्या मात्र 6, 03, 897 है।

60 प्रतिशत भारतीय आज भी खुले स्थानों पर शौच के लिए जाने को मजबूर हैं जबकि 90 प्रतिशत स्कूलों में भी शौचालय की व्यवस्था नहीं है।

भारत में 5 करोड़ बच्चे आज भी प्राथमिक शिक्षा से महरूम हैं।

सत्य धर्म बोध उत्सव

प्रत्येक वर्ष की तरह सत्य धर्म बोध उत्सव 27 अगस्त से 29 अगस्त 2010 को 18 सैक्टर शुभ - वती धर्म शाला में मनाया गया। इससे पहले ईतवार को सभाएं मन्त्री देव समाज के ग्रह में कराई गई।

धर्मशाला के ऊपरी विंग को उत्सव के लिए तैयार किया गया। इसमें श्रीमान जगदीष जी के साथ मधू सूदन जी, श्री जलधर जी सहायक हुए। सफाई, सजावट, उच्च कर्मचारियों की फोटोज़ आदि से हाल बहुत सुन्दर बन गया।

भोजन वा कुर्सियों आदि के द्वारा बैठने का उचित प्रबन्ध किया गया। गुरू महाराज के अर्चन के लिए सुन्दर फूलों का प्रबन्ध किया गया। भजनों का गान श्री जगदीष जी वा सुनील दत्त जी बहुत सुन्दर भावों से करते रहे।

उत्सव में शामिल होने के लिए यू.पी, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान के निम्नलिखित स्थानों से यात्री पहुंचे, देहरादून, दिल्ली, मेरठ, खतौली, लुधियाना, गोनियाना मण्डी, महिमा सवाई, मोगा, संगरूर, थराजवाला, कल्याण, मोहाली, चण्डीगढ़, दड़वा, पंचकूला, यमुना नगर, केसूपुरा, मलेका, गंगानगर, गजसिंह पुरा - बंगे, पदमपुर आदि से यात्रीगण पहुंचे।

सभाओं में लगभग हाल भर जाता रहा। 70 - 80 जनों तक हाज़री रही।

सभाएं श्रीमान बलदेव संह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और डा० विनोद जी खेड़ा ने करवाई। सभाएं बहुत प्रभावशाली होती रही, बहुत अच्छा मण्डल बनता रहा।

किताबों की छोटी सी स्टाल भी रखी गई। माटोज़ भी लगाए गए। पू० भगवान की छवि बहुत सुन्दर स्थान पर स्थापित की गई।

सभाओं का संक्षेप हाल नीचे दिया जा रहा है: -

प्रवेश सभा - 27 अगस्त 2010

सभापति - श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

शाम को 5 बजे भजन का गान पू० भगवान की छवि द्वारा अर्चन, देव स्तोत्र का गान, व्याख्या और सहाय प्रार्थना की गई।

फिर एक भजन का गान हुआ: - "तुम्हारे दर से है सत्गुर, धर्म का दान मिल जावे": -

फिर सभापति जी ने तीन प्रश्न किए

1. इस उत्सव का नाम क्या है?
2. सब से कीमती वस्तु क्या है?
3. हमारे सब से बड़े शत्रु कौन हैं?

उक्त विषयों की व्याख्या करते हुए बताया कि धर्म बहुत बढ़ रहे परन्तु संसार की हालत दुख प्रद हो रही है। ऐसे दुखांत की ठोस उदाहरणें पेश की: -

उनके ही गांव का एक जन धन अनुराग के बढ़ने से धोखे से कैसे ज़मीनों पर कब्ज़े करता रहा, अधरंग हुआ, दर बदर होकर किस भयानक मौत को प्राप्त हुआ, सारे दुखांत का ब्यान किया।

एक औरत ने सुसराल से दुखी होकर 2 बच्चों समेत खुदकुशी कर ली। सुसराल वालों की गिरफतारियां हो रही हैं।

भिर्चपुर में दलितों पर कहर बरपा कर दिया गया। चन्दपुरा गांव में एक पिता ने जवान बेटी को उसके प्रेमी के साथ गोली मार दी और स्वंय को पुलीस के हवाले कर दिया।

पांच जज अपनी Promotion के लिए परीक्षा देते हुए नकल करते पकड़े गए।

एक बहुत माननिय जन ने अपनी बेटी का पर्चा किसी और से करवा दिया।

इन सब का मुख्य कारण है कि मनुष्य को चलाने वाली उसकी भीतर की शक्तियों के विषय मे घोर अन्धेरा है। इस दरबार में जो भी आए हैं, वह सौभाग्यवान हैं उनका कुछ अन्धेरा दूर हो, यह कहते हुए सभापति जी ने खड़े होकर यात्रीगण का स्वागत किया।

आगे उन्होंने बताया कि यह दर मनुष्यों के व्यवहार बदलता है। सिन्ध का एक डाक्टर, जिसने मरीज़ देखने जाने से मना कर दिया क्योंकि उसे फीस पेशगी चाहिए थी। परन्तु पू० भगवान के देव प्रभावों ने उसका नज़रिया बदल दिया। कनल जी के सम्पर्क में आए, उन्होने प्रण लिया कि एक वर्ष वह मरीज़ों को मुफ्त में देखेंगे। केवल यही नहीं यह डाक्टर अपने एक विरोधी शत्रु के घर में रात के 2 बजे मुफ्त देखने गए।

आत्मा निर्लेप नहीं, नीच गतियां करके हम आत्मा का घात करते है। उच्च गतियां, सेवा की गतियां करके बलवान बनता है। जो ज़हर पीता है, उसका परिणाम मौत है, जो अमृत पीता है उसका परिणाम ज़िन्दगी है। नियम पूरा हो गया परिणाम निकलेगा। सुकरात को ज़हर दिया गया, वह बचे नहीं।

नेचर में विकास और विनाश के दो नियम हैं। विकास का नियम मित्रता का नियम है। इसका साथ देने मे सुरक्षा है।

सत्य धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है, उच्च प्रभावों से उच्च प्रेरणाएं पैदा होती हैं। उच्च प्रेरणाओं को कुचलना नहीं चहिए। यदि कोई उच्च प्रेरणा पैदा नहीं होती, तो यहां आने का काई लाभ नहीं। यह ऐसा मुबारक स्थान है जहां हमें अपनी नीच शक्तियों वा नीच इच्छाओं का ज्ञान मिलता है।

एक बेटा अपनी मां से नाराज़ था, क्योंकि उसको घी, पंजीरी, कपड़े आदि सब कुछ दिया, परन्तु एक जूते लेकर नहीं दिए। बोंडिंग में रहते हुए वह मां को नाराज़गी में पत्र नहीं लिखना चाहता था। हम उपकारियों से सारा दिन उपकार पाते हैं, एक खुशी पूरी न हो तो बाकी सब कुछ भूल जाते हैं। कतल कर दिया अभी कुछ दिनों की खबर है, पोते ने दादी को क्योंकि दादी ने उसे उस दिन पैसे नहीं दिए।

हमारे भीतर काम, क्रोध, लोभ, धन अनुराग, नशे मान, बुराई भरे पड़े हैं, उन्हीं में सुख मिलता है, न मिले तो दुखी हो जाते है। जैसे कोल गैस में सांस लेकर मनुष्य खत्म हो जाता है। उसी प्रकार नीच सुख अनुराग हमारा नाश कर रहे है।

हमारा श्रद्धा का भाव घट रहा है या बढ़ रहा है हमारी कृतज्ञता घट रही है या बढ़ रही है, अगर घट रहे हैं तो हमारी आत्मिक मौत है।

परम पू० भगवान दवेात्मा के देव प्रभाव हमें हमारी असल हालत दिखाते हैं। हमें बुराई का सामना करने, मोह बन्धनों से ऊपर करने के योग्य बनाते हैं। एक नौजवान को पुलिस पकड़ कर ले गई। पिता पंचायत लेकर उसे छुड़ाने गया। वहां जाकर उसकी गंभीर गल्ती का पता लगा। पिता गुरू का सेवक था, उसने बेटे को छुड़वाने से न कर दी कि जब इसने गल्ती की है तो इसे सज़ा मिलनी चाहिए। कुछ समय बाद वह छूट गया और संगत में आने लगा, उसे अपनी ग़ल्तियों का एहसास हुआ, उसने सबसे क्षमा मांगी। अब बाप कहता है कि मेरा बेटा श्रवण कुमार बन गया है।

उच्च भावों के बिना धर्म नहीं।

इसके बाद श्री मन्त्री जी ने इस दर की

मोटी मोटी विशेषताओं का वर्णन किया। इन सभाओं से लाभ उठाने के लिए गुण चिन्तन, उपकार स्मरण, सेवा प्रार्थना आदि के साधन बताए और अगले दिन का प्रोग्राम बताया। यह सभा काफी असरदायक थी।

28.8.2010 सुबह 8 बजे

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी

पहला भजन श्री दत्त साहिब ने "मेरे जीवन के दाता, तुमरी महान महिमा" नामक भजन बहुत सुरीली आवाज में गाया। देव स्तोत्र के गान, व्याख्या के बाद सहाय प्रार्थना की और जगदीष जी ने "मुझ को मेरा बोध कराओ" नामक भजन भाव पूर्ण होकर गाया।

फिर सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया और बताया कि जो ड्राईविंग नहीं जानता, यदि वह कार चलाता है, वह स्वंय दुर्घटना ग्रस्त होता है और दूसरों को भी हानि पंहुचाता है। हम जो अपने वजूद के विषय में ज्ञान नहीं रखते, हम दुख और हानि उठाते हैं। दुखों के कारण जानने के लिए महात्मा बुद्ध ने राज पाठ त्याग दिया। एक पति पत्नी जो सरकारी अध्यापिक हैं, 38 वर्ष से अलग हैं। अदनान सानी के मोटापे के कारण डाक्टरों ने कुछ महीने ही जीने की अवधि बताई। पिता ने अपील की कि पिता के लिए बेटे की अर्थी को कांधा देना बहुत कठिन है। उन्हेंने पक्का इरादा किया, अपनी कमज़ोरियों को जाना और डाक्टरों की सहायता से कविंटल से भी अधिक वज़न घटाया।

लड़कियों को माता पिता गांवों में तीजों में नहीं जाने देते थे, क्योंकि विवाह शादियों वा तीजों में जवान लड़कियां वहां के वातावरण के कारण और ही रंग में रंग जाती हैं।

एक 2 जन ने मकान बनाते बनाते हुए अपना ईलाज समय पर नहीं किया और मौत को गले लगा लिया। एक बहुत सूझवान जन जो अपने नुकसों से दूसरों का ईलाज करते थे, खुद के चोट लगने पर अबोधता दिखाई, डाक्टर ने कहा कि अंगूठा कटवा दो पर नहीं कटवाया फिर बिमारी और बढ़ गई, अब पैर काटने की नौबत आ गई, आख़िर टांग ही काटनी पड़ी। एक हलवाई ने समयपर ईलाज नहीं करवाया, पैसा नहीं छोड़ा पर दुनियां छोड़ दी।

मनुष्य के अन्दर की शक्तियों रूपी मशीनरी बहुत गुझंलदार है, वह कठिन से कठिन मशीनरी चलाना तो सीख जाता है, परन्तु स्वंय की मशीनरी को नहीं जानता।

हमें चलाने वाली शक्तियां सुख के प्रेम की शक्तियां हैं। सुख के प्रेम ही भाव शक्तियां है। शराबी को शराब का प्रेम चलाता है। सुख भाव हमारे भीतर है और अपने भावों के प्रति हमारे भीतर अन्धेरा है। एक एक कर्मचारी, विकासार्थी भी अपने जीवन के विषय में अन्धेरे में रहते हैं।

हम अपने आत्मिक अन्धेरे के विषय में स्वंय नहीं जान सकते। हमारे भीतर तीन किस्म का अन्धेरा है। हम न अपने आत्मिक अन्धेरे को जान सकते हैं, न स्वंय उनसे मोक्ष पा सकते हैं। अभिमन्यू की तरह चक्र व्यूह में जाना तो सीख लिया, परन्तु निकलना नहीं सीखा, उसी प्रकार सुखों की घुमनघेरी में हम फंस तो जाते हैं, परन्तु उनसे निकलना नहीं जानते।

परम पू० भगवान देवात्मा यह मार्ग दिखाते हैं और उससे निकालने की क्षमता रखते हैं। उनसे जुड़कर और सत्संग से जुड़कर हम रक्षा पा सकते हैं और महा हानि से बच सकते हैं।

10 बजे यह सभा समाप्त हुई और थोड़े विश्राम के बाद दूसरी सभा शुरू हुई।

दूसरी सभा: - सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

भजन के बाद श्रीमान जी ने स्वस्तित्व सम्बन्धी आदेशों का पाठ और व्याख्या आरम्भ की। सभापति जी ने बताया कि अपने अस्तित्व के सम्बन्ध में गुरू महाराज की शिक्षा निराली है। बिल्कुल और धर्मो से भिन्न है। सत्य है, परन्तु सचाई हमेशा कड़वी होती है।

पुराने धर्म बताते आए हैं, कि इस संसार से, इसके सम्बन्धियों वा समानों से बन्धना नहीं चाहिए। परमात्मा का सम्बन्ध सच्चा है, बाकी सब माया है। परन्तु यह संसार सत्य है। सारे पदार्थ भी सत्य है। मनुष्य की हस्ती माया नहीं, सत्य है। कुछ स्थूल पदार्थ हैं, जो नज़र आते हैं, कुछ सूक्ष्म हैं। वह दिखाई नहीं देते, जैसे हवा, बिजली की लहरें, शक्तियां आदि।

परम पू० भगवान देवात्मा की हस्ती विकास क्रम में उत्पन्न बिल्कुल अलग हस्ती है। मनुष्य सुख अनुराग के बन्धुए हैं, गुलाम हैं, पू० भगवान के भीतर किसी सुख की गुलामी नहीं आई। इसलिए उनकी बाणी को समझने की आवश्यकता है। यह आदेश उनकी बाणी है। इनमें रोशनी भरी हुई है।

युधिष्टर जी को अध्यापिक ने पढ़ाया, "सत्य बोल, गुस्सा मत कर" अध्यापिक के बार - बार पूछने पर भी उन्होंने यही कहा कि मुझे आधा सबक याद हुआ है। अध्यापिक ने थप्पड़ लगा दिया तो कहने लगे कि अब सारा सबक याद हो गया। उसका अर्थ था कि सत्य तो वह बोलते थे, परन्तु गुस्सा मारने पर भी गुस्सा नहीं आया तो उन्हें लगा कि अब पूरा सबक याद हो गया है। इन आदेशों को पढ़ने का तभी लाभ है, यदि उन्हें कुछ न कुछ जीवन में ढाला जाए।

हमारे अस्तित्व में दो चीज़े हैं, जड़ और शक्ति अर्थात शरीर और जीवनी शक्ति। जीवनी शक्ति का बोध सब शिक्षाओं से उत्तम है।

शरीर और आत्मा का अटूट सम्बन्ध है। आत्मा ही शरीर का निर्माण कर्ता है। यदि निर्माणकारी शक्ति ही ठीक हालत में न हो तो शरीर भी ठीक निर्माण नहीं हो सकता, इसीलिए जब जीवनी शक्ति को माता के गर्भ में कोई हानि हो जाती है, वह शरीर निर्माण नहीं कर सकती तो गर्भपात हो जाता है।

हमारा वजूद इस विश्व का अंश है, उसके नियमों के अधीन है। हम चारों जगतों, भौतिक, पशु पौधे वा मनुष्य जगत पर निर्भर हैं। हम जो सीखते हैं इन सम्बन्धों मे रहकर ही सीखते हैं।

मुख्य लक्ष्य: - मनुष्य का मुख्य लक्ष्य नीच रुचियों से मोक्ष और उच्च गतियों द्वारा आत्मा का विकास करना है। जहां तक हमारा तन, धन, विद्या, सम्पद, मान, यश वा पद इसमें सहायक हों, हमारा विकास हो, वहां तक उचित हैं। So far no further का नियम काम करता है। देव प्रभावों का लाभ आत्मा की मोक्ष के लिए अवश्यक है। यह आदेश दर्पण हैं। उसकी रोशनी में हम अपना रूप देख सकते हैं।

यह शिक्षा प्रद शानदार सभा चार बार जय ध्वनि के साथ समाप्त हुई।

शाम 5 बजे सभापति श्रीमान डाक्टर विनोद जी खेड़ा :-

विषय :- देव प्रभावों का अद्वितीय कारज

जगदीष जी और दत्त जी ने बड़े उत्साह से दो भजनों का गान किया।

सभापति जी ने फिर प्रभावों के विषय में समझाने का यत्न किया। सूक्ष्म वा अदृष्य शक्ति की ज़ोरदार लहरें जो वजूदों के भीतर परिवर्तन पैदा करती हैं, उन्हें प्रभाव कहते हैं।

हम सूर्य की शक्ति वा उससे निकलने वाली उनके प्रभावों को देखने की योग्यता नहीं रखते। क्योंकि किसी भी शक्ति को हम देख नहीं सकते, यह सम्भव ही नहीं, परन्तु उनके द्वारा आए परिवर्तन को हम देख सकते हैं। प्रभाव वह चीज़ है जो अपने द्वारा परिवर्तन पैदा करते हैं।

किसी पौधे के बीज को पत्थर में रखने से सूर्य की रोशनी वा गर्मी के प्रभावों से नष्ट हो जाना अवश्यक है। शक्ति की लहरें होती हैं, हम उनके कारज को देखते हैं।

देश प्रेम की फिल्म देखकर हमारे भीतर कई प्रकार के देश प्रेम सम्बन्धी भाव जागते हैं।

The Charge of The Light Brigade के विषय में बताया कि किस प्रकार कमांडर के गल्त हुक्म से 600 जवानों की मौत हो गई, इससे कमांडर के प्रति नफरत की लहर उठ पड़ी, परन्तु एक कवि ने उन नौजवानों के देश प्रेम को देखा और उस देश भक्ति की कविता लिखी, जिसने देश भर में देश भक्ति वा कुर्बानी का जज़बा भर दिया: -

You are not to question why,
There is what to do & die

अर्थात किसी सिपाही ने प्रश्न नहीं किया, केवल करने और मरने का जज़बा दिखाया। इससे सारा देश हिल गया, यह है प्रभावों की करामात।,

इन देव प्रभावों की ही करामात है कि एक जन जो नीच घृणा की भयानक आग की पकड़ में अपने दुश्मन को कत्ल करने का मन्सूबा बनाए हुए था, उन्हें यह प्रभावदायक संगत मिली और उन्होंने अपना इरादा बदल दिया, एक महोत्सव पर उन्होंने यह घटना बताई।

परम पू० भगवान देवात्मा के देव रूप से ज़ोरदार प्रभाव निकलते हैं, जो अधिकारी जनें में परिवर्तन पैदा करते हैं।

सभापति जी ने बताया कि उन्होंने शिव खेड़ा साहिब के लैक्चर सुनें, एक बार उन्होंने बताया कि मैंने अपने मताहतों को हिदायत दी जब वह उपस्थित हों, तो किसी के पूछने पर चाहे वह कितने busy हों उनके उपस्थित होने के विषय मे झूठ न बोला जाए। सभापति जी ने भी अपने अधिक काम करने वालों को यह हिदायत दी।

गुरू महाराज जी ने ही यह सचाई बताई हर मनुष्य सुख का अनुरागी होकर झूठ और बुराई की तरफ जाने के लिए बेबस है।

परम पू० भगवान देवात्मा की निराली शक्तियों के ज़ोरदार प्रभाव ही नीचता को दिखाते हैं और कुछ न कुछ बचाते हैं।

अपने पड़नाना जी के शानदार परिवर्तन का ब्यान किया कि किस प्रकार वह धन अनुराग और अंह अनुराग के वश नारकिय जीवन बिता रहे थे। 60 वर्ष की उमर में शानदार परिवर्तन हासिल किया।

अमरीका में पढ़ते हुए, वह अण्डे मांस की बनी ब्रैड वा बिस्कुट न हों, बहुत समय लगाकर ढूडते थे, धीरे-धीरे वह फजूल लगने लगा कि मैं इतना कीमती पढ़ाई का समय मैं इसमें बर्बाद करता हूँ, उसी समय उन्हें अनुभव हुआ कि उनमें नीच परिवर्तन आने लगा है यह बढ़ेगा, तो अमरीका छोड़ने का फैसला कर लिया। गुरू महाराज के प्रभावों में आकर अपने आपको सुरक्षित अनुभव

किया।

इनके ब्यान के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ब्यान किया कि विश्व के दो रूप हैं सूक्ष्म और स्थूल।

भोपाल गैस के सूक्ष्मों प्रभावों ने कितनी बर्बादी की। वह बिमार, निढाल अवस्था में मनाली गए, वहां कि ताज़ा हवा ने नई जान फूंक दी।

देव प्रभावों में सांस लेने से भी हमारे वहम, मिथ्या, झूठ गारत होते है। मैं यह समझता था कि देव समाजी नास्तिक हैं, इनका मुंह देखकर रोटी नहीं मिलती।

"मुझ मे देव जीवन का विकास" दो दिनों में पढ़ लिया, ऐसे प्रभाव मिले कि ईरादा कर लिया कि अब काम तो यही करना है, और उसके लिए कभी पछतावा नहीं हुआ। तीन पुश्तों ने इससे लाभ उठाया है।

श्रीमान जगदीष जी का शानदार परिवर्तन उन्हीं प्रभावों की देन हैं

2 घण्टे तक यह प्रभावशाली सभा हुई। चार बार जय ध्वनि करके समाप्त हुई। अगले दिन का प्रोग्राम बताया गया।

29.8.2010 सुबह 8 बज सभापति:- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

विषय :- भगवान देवात्मा की नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन पैदा करने का अनोखा कारज

पहले जगदीष जी ने भावपूर्ण होकर "धन्य धन्य कहती तृप्त न होती जिब्हा मेरी बारम्बार" नामक भजन का गान किया।

गुरू महाराज का अर्चन, देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या के बाद सुनील दत्त जी ने "बिना तुमरे मेरे सत्गुरू नहीं कोई ठिकाना है" नामक भजन बहुत सुन्दर तर्ज़ पर गाया।

सभापति जी ने पहले पाप सम्बन्धी प्रतिज्ञाओं के विषय में पूछा, नीच जीवन के विषय में बताया कि किसी की जान, धन, सुख शान्ति, मान, सन्मान, हक, सेहित आदि की हानि नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं द्वारा ही होती है। यही नीच जीवन है। जनरल मुशरफ को जिसने जनरल बनाया, उसी को कैद कर लिया। देश से निकाल कर दिया। इन्सान नाशुकरा है, यही नीच जीवन है।

अध्यापिक जिन्हें देश का निर्माता कहा जाता है, वह बलात्कारी बन जाते हैं, नर्क इससे बढ़कर नीच जीवन द्वारा क्या हो सकता है।

हमारे अक्ल की शक्तियां और हृदय की शक्तियां उसमें सहायक होती हैं।

उच्च जीवन का आकाल पड़ा हुआ है। विदेश मे किसी ने दूध देने वाले से पूछा क्या दूध में पानी तो नहीं वह बहुत हैरान हुआ और कहा कि "आप अवश्य ही किसी बेईमान देश से आए हो। क्या मिलावट करके मैं अपने ही देशवासियों की सेहित खराब करूंगा।" हमारे यहां 50 हज़ार लिटर नकली दूध, टनों नकली घी और खोया पकड़ा गया है। नीच जीवन की देश में गंगा बहती है।

रामपुरा में एक डाक्टर जो स्वंय दिल के मरीज़ थे, धन के लालच में दिन में इतने अप्रेशन किए कि खुद दिल के दौरे से मर गए। अधिक जमीन वा धन वाले आदमी को बड़ा आदमी समझा जाता है।

एक जन एक साधू से दोस्ती डालकर साधू बन गया, धीरे धीरे उस साधु को ही वहां से निकाल दिया, परन्तु साधु ने कहा,"जिस प्रकार तुमने मुझे निकाला है, उसी प्रकार कभी तुम्हें भी निकाला जाएगा। तेरा घोर निरादर होगा, तू बुरी मौत मरेगा। "उसकी भविष्य बाणी सत्य हुई वह

बहुत गन्दी वा अपमान जनक मौत मरा। नीच जीवन के परिणाम अवश्य निकलते है।

मनुष्य ज़ालिम बनकर अपने से कमज़ोर पर जुल्म करता है। जब कोई जन मां को अपशब्द बोलता है, तो नीच जीवन की कोई सीमा नहीं रहती। गरीब और कमज़ोर गाजर मूली की तरह ही दिखाई देते हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने नीच जीवन मिटाने का अनोखा कार्य आम्भ किया है। वह कोयले जैसे जीवन को हीरा बना देते है। उन्होने कुछ परिर्वतन श्रद्धा पूर्वक बताए।

आज जनता किस चीज़ पर नाज करे। लीडर, गर्वनर, डाक्टर, टीचर, विद्यार्थी, जज, दुकानदार, व्यापारी, सब नीच जीवन की लीला प्रगट करते हैं।

सभापति जी ने बताया कि उनका भाई 11-12 वर्ष सेवक रहा, परन्तु सेवक बनकर नीच जीवन की भेंट चढ़ गया श्राब पी पीकर भरी जवानी में चल बसा।

यह दर रूहानी हस्पताल है, यहां पता लगता है कि हमारी अन्दर ही अन्दर की चिन्ताएं भी नीच जीवन है। हमारे भीतर नीच चिन्ताओं, नीच क्रियाओं, नीच बोलों की गन्दगी भरी पड़ी है। स्वार्थ, अंहकार, नीच घृणा, ईर्षा, द्वेष भरा पड़ा है।

एक अनपढ़ पत्नी को चपरासी पति ने पढ़ाया, वह हुशियार थी, इतना पढ़ गई कि उसी स्कूल में प्रिंसीपल लग गई। इस अहंकार में पति के उपकारों को अनुभव करने के स्थान पर उसे डांट डपट इतनी करती रही कि पति सहन न कर सका, उसने खुदकुशी कर ली।

एक नौजवान ने अपनी बहन को कहा कि माता पिता को ले जाए, नहीं तो वह उन्हें Shoot कर देगा। हमारे हाथों उपकारी तड़पते हैं। सम्मान न करना, हमदर्दी न करना, सेवा न करना नीच जीवन है।

पू० भगवान ने न शुकरे जनों को बदला है। रिश्वतखोरों से रिश्वत छुड़ाई है। नीच जीवनों में वह क्रान्ति लाए हैं।

इसके बाद सभा का दूसरा भाग श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सम्भाला।

उन्होंने बताया कि पाप को मिटाने का किसी ने लक्ष्य नहीं रखा। कोई सत्य और शुभ का आशिक वा झूठ बुराई का पूर्ण शत्रु पैदा नहीं हुआ। धर्म मत बहुत हैं, जिन्में नाम जपना वा जपाना होता है, पाप मिटाने का काम नहीं होता। देवात्मा आत्मिक अन्धकार वा पाप हर्ता पैदा हुए हैं। माईक जैक्सन, माईस टाईसन, टाईगर वुड जैसे लाखों योग्य होकर भी नीच जीवन ने ख़वार किए हैं।

श्रीमान जी की अपील पर जगजीत सिंह जी लुधियाना, राजेन्द्र जी देहरादून, नरेन्द्र जी मेरठ, श्रीमान सुनील जी आदि ने महोत्सव पर पहले पहुंच कर सेवा करने का भाव प्रगट किया। फिर भाव प्रकाश शुरू हुए:-

भाव प्रकारश :-

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- मैं अपने माता पिता को बहुत श्रद्धा वा सम्मान से भरकर प्रणाम करता था, पर अब मैंने महसूस किया है कि मेरे प्रणाम की गहराई में कमी आ गई है, वह रसमी और शुष्क हो गया है। मेरे अंह के बढ़ने से यह लीला पैदा हुई। मैं अपने घमंड को अब आड़े नहीं आने दूंगा। उच्च रस से भरकर माता पिता को प्रणाम किया करूंगा। मैं गुरू के देव अमृत का भिख़ारी बन सकूं।

दो सत्संगी :- उन्होंने खड़े होकर कबूल किया कि उन्होंने 2 बार शराब पी है, अब इससे बचे रहेंगे। महोत्सव पर और सम्बन्धियों को भी

लेकर आंएगे। (2 - 3 जनेां को संगत में लेकर भी आऐ थे) ।

श्री लश्कर सिंह जी (नये जन) मैं इस सत्संग से बहुत प्रभावित हुआ हूं, महोत्सव पर अपने बेटे को लेकर आऊंगा।

श्री राजेन्द्र जी देहरादून :- मेरा इतना भला हुआ है कि मेरे बच्चे अब बहुत सुखी हैं। बच्चों समेत सारा परिवार महोत्सव पर आएंगे। अपनी बहन को 20,000 रू० दिए। मेरे पास तो अपनी पैंट कमीज़ के लिए भी पैसे नहीं थे, नशों में डूबा रहता था। अब बड़े बड़े लोगों के साथ घूमता हूं। समाज मिल गई, सब कुछ मिल गया। भाई के साथ भी सम्बन्ध प्यार भरा हो गया। गुरू को बार बार धन्यवाद देता हूं।

श्रीमती डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों :- मुझे अपने पड़दादा जी की बहुत याद आई। वह स्वंय देव समाज में आए और कर्मचारियो को पिता जी के पास भेजा, जिससे हमें इस नायाब दर से जुड़ने का अवसर मिला। मुझे अपने मोह अनुराग का घटिया रूप नज़र आया। यहां बहुत शक्ति मिली है, सहारा मिला है, बहुत धन्यवादी हूं। अपनी कमियां नज़र आई हैं। पिता जी की समाज से जुडे रहने की हिदायत नज़र आई है। मेरा डिप्रैशन दूर हुआ है। अपने बहन, भाईयों के उपकार नज़र आए है, उनको धन्यवाद देती हूं। यह सब समाज की देन हैं।

श्रीमान सुभाष चन्द्र जी पंचकूला :- सभाओं के लाभ के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। अपने बजुरगों का ऋण चुकाया नहीं जा सकता, जिनकी कृपा से इस दर से जुड़े। धर्म सम्बन्धियों को धन्यवाद देता हूं। जो आज आर्थिक समृद्धि है, वह समाज की कृपा है। कोशिश करूंगा कि ईतवार की सभाओं में आता रहूं।

श्री नरेन्द्र जी धीमान :- गुज़रे हुए दिनों को याद करता हूं, कि कैसे मैं लुट रहा था। आख़री श्वास तक इस दर से जुड़ा रहूं। अपने उपकारियों के लिए मंगल कामना करता हूं।

श्री तेजराम जी गुजरात :- गुरू की शक्ति के कारण मैं अपने जीवन की दुघर्टना से निकल आया। और सम्बन्ध छोड़ना स्वीकार किया, परन्तु मां को नहीं छोड़ा। मैं एक दफा कतल का ईरादा लिए फिरता था, इन प्रभावों ने बचाया है, सब गुरू की कृपा है।(हमेशा की तरह मल्लेका मन्दिर के लिए 1000रू दान दिए)।

श्री अनिल कुमार जी चण्डीगढ :- मैं सिगरेट से बचा रहना चाहता हूं। यह संगत नशों से बचा रही है।

श्री अमनदीप जी :- मैं माता पिता को प्रणाम किया करूंगा, अपनी माता वा मामी जी से मुआफी मांग कर आया हूं। परीक्षा न हुई, तो महोत्सव पर ज़रूर आऊंगा।

श्री ओम प्रकाश जी आदर्श :- मैं कई प्रकार के शुभ कर काम करता रहता हूं। इस दर से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहता हूं। (एक अपना लिखा भजन गाया)।

एक नया जन :- पाप, मिथ्या छुड़ाने का बल बढ़ा है। पदमपुर में हर सभा में शामिल हुआ करूंगा। महोत्सव पर परिवार सहित आऊंगा।

कुछ धर्म सम्बन्धियों ने लिखकर भाव प्रकाश देने की इच्छा जताई। गुरू महाराज, सहायकारियों वा धर्म शाला के प्रबन्ध का धन्यवाद करके, देव आरती का गान वा जय ध्वनि के साथ यह प्रोग्राम सम्पन्न हुआ।

स्वादिष्ट भोजन परोसा गया और कुछ धर्म सम्बन्धियों ने फोटोज़ वा बिछाई आदि को Wind up करने में सहायता की।

एक सेवक

एक पत्र

1) सत्य धर्म बोध उत्सव में शामिल होने पर श्रीमान अवतार सिंह जी ने भोगा से यह पत्र भेजा।

बहुत ही सन्मान के योग्य श्रीमान जी,

सत्य देव की जय।

श्रीमान जी! यह चन्द शब्द लिखते समय मुझे अपना घटिया वा कृतघ्न रूप नज़र आता है। गुरू महाराज के दरबार से हमने इतनी बरकतें पाई हैं, जिनका ब्यान नहीं हो सकता, केवल हमारा परिवार महसूस ही कर सकते हैं। क्योंकि केवल हम ही गुरू महाराज के दर से जुड़ने से पहले और जुड़ने के बाद का सही लेख जोख़ा कर सकते हैं।

श्रीमान जी! आपकी उमर और आपका संग्राम देखकर गुरू महाराज के दरबार का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इस दर ने कैसे कैसे फरिश्ते पैदा किए हैं। मुझे याद है कि एक समय हमने समाज में ऐसे हालात देखे जो आज बाहर की दुनियां में भी न हों, मेरे जैसी दुर्बल आत्मा हताश होकर घर बैठ गई और कभी भी नर्क की ओर परत सकती थी।

पर नेचर को कुछ और मन्जूर था। बिल्कुल इस समय हमारे घर में एक फरिश्ता, जिसके उपकार का बदला हमारी आने वाली नसलें भी नहीं दे सकती, वृद्ध अवस्था में बिमार सेहत लेकर हमारे घर में पंहुचे।

मेरी मुराद परलोक वासी बहुत ही सन्मान के योग्य डा० इकबाल सिंह जी से है। उन्होंने कहा, बेटा, मेरा आपके साथ विशेष सम्बन्ध है और प्यार है। मुझे इस बात की बहुत तकलीफ रहती है कि आपने इस दर से बहुत बरकते पाई हैं, तुम नर्क से निकले हो, कहीं इन हालातों की तबदीली की बलि न चढ़ जाना और मेरी यही दिली इच्छा है कि अब आप केवल और केवल श्रीमान बलदेव सिंह जी के साथ जुड़कर ही सुरक्षित रह सकते हो। इसके बाद डाक्टर साहिब ने दर्जनों प्रेरणा दायक पत्र हमें लिखे होंगे।

उनकी प्रेरणा के कारण पहली बार हमें सत्य धर्म बोध उत्सव पर आने का और सभाएं सुनने का मौका मिला। उस समय फैसला कर लिया कि अब श्रीमान जी का लड़ नहीं छोड़ना।

श्रीमान जी! आप हमारी ज़िन्दगी के हर दुख, सुख में भागीदार बनें। आपने हमारी रूहानी सेवा तो की, इसके उपरान्त हमारी मुसीबत के समय मदद भी की, उस का एहसास ही किया जा सकता है।

श्रीमान जी! आप कैसे हमारे घर आकर हमारे भले के लिए सभाएं करवाते रहे और हमारी छोटे छोटे सुख सहूलतें का ख़्याल रखते रहे, यह सब लिखा नहीं जा सकता।

इसके बदले में हमने आपकी कोई सहायता नहीं की, बहुत दफा आपसे वायदे करके निभा नहीं सके और कितनी तकलीफें तुम्हें पहुंचाई। अनेक बार ऐसा करके आपका अपमान किया। इसके बावजूद भी आप हमारे भले के लिए तड़पते रहे। यह सोचकर मेरे सत्गुरू के आगे बार-बार सिर झुकता है कि हे सत्गुरू! आपने कैसे फरिश्ते पैदा किए हैं, इसकी मिसाल नहीं मिलती।

श्रीमान जी। यह सोचकर अपने पर लानतें डालता हूं कि जिस दर से इतनी बरकतें मिली हैं, सेवा पाई हैं, जीवन देने वाली सभाऐं सुन कर भाव प्रकाश की सभा में चन्द शब्द नहीं बोल सका।

श्रीमान जी! उत्सव पर शानदान लंगर, आपकी अपने हाथों से सेवा के नज़ारे याद करके गुरू महाराज के आगे बार-बार सिर झुकता है।

श्रीमान बलबहाबुर सिंह जी, श्रीमान डाक्टर खेड़ा साहिब की सभाएं ज्ञान वर्द्धक वा अन्दर से हिलाने वाली थी।

श्रीमान जी! हमारे पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत है, वह इस दर की देन है। यदि यह दर न मिलता और उसके बाद आप न मिलते मेरा तो पक्का ही था कि अब तक एक इतिहास बन गया होता।

आपकी सेवा में बेनती है कि आप पहले की ही तरह हमारे सिर पर हाथ रखो। कोशिश करूंगा कि आपको निराश न करूं, आपकी उमीदों पर पूरा उतरूं।

धन्यवाद सहित

अवतार सिंह

2) विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी सत्यदेव की जय।

इस बार 'सत्यधर्म बोध उत्सव' पर जो कुछ लाभ हुआ इसका थोड़ा सा वर्णन करना चाहूँगा।

प्रवेश सभा से लेकर सभी सभायें ध्यान से सुनी, ध्यान अपनी तरफ गया, कमी मुझमें है। लगभग सभी सभाओं से कुछ कुछ लाभ उठाया। गुरू महाराज मनुष्य मात्र को जो धर्म जीवन का दान देना चाहते हैं वह और किसी धर्म समाज से नहीं मिलता है। यह मनुष्यमात्र का महा महा सौभाग्य है कि इस सृष्टि के सरताज अद्वितीय देव ज्येति, देव तेज लेकर प्रकट हुए हैं और वे अधिकारी मनुष्य आत्माओं मे नया जीवन नई शक्ति और, आत्मबल का संचार करना चाहते हैं।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे ऐसे गुरू मिहे हैं जिनको पाकर दिल को बहुत तृप्ति मिली है। जीवन का कुछ महत्व समझ मेंआया है कि जीवन का लक्ष्य केवल मौज मस्ती ही नहीं है वरन चारों जगतों से पाये उपकारों के बदले में मेरी भी कुछ जिम्मेदारी है। जब तक जीवन से कुछ सेवा नहीं निकलती तब तक जीवन निष्फल ही है और इस धरती पर एक बोझ के समान ही है। इस बर सबसे अच्छी और शिक्षाप्रद जो सभा लगी वो यह कि आत्मा और शरीर का अकाटय सम्बन्ध है। आत्मा शरीर को बनाती हैं, पालती और जीवन को परिचालित करती है। अगर मनुष्य को आत्मा की होश हो, तभी ये शरीर रूपी गाड़ी अच्छे ढंग से चल सकती है। मनुष्य दीर्घायु हो सकता है किसी की सेवा में काम भी आ सकता है, और जीवन में उच्च परिवर्तन के आने से मानव जीवन सफल और उच्च रस से भर सकता है जीवन अपने और दूसरों के लिए सेवाकारी कल्याणकारी बन सकता है। मुझे बहुत प्रसन्नता होती है कि जब से गुरू महाराज की शरण मिली है जीवन में बहुत बदलाव आया है, अब महसूस करता हूँ कि ऐसे सतगुरू के दर से सदा जुडा रहूं ताकि जीवन और भी खुशियों से भरा रहे। एक कामना मन में आती है कि गुरू का मिशन फले-फूले और आगे बढ़े।

कोई मुझसे पूछे मैं क्या चाहता हूँ।
गुरू के मिशन की फतह चाहता हूँ।

धन्यवाद भाव से

गुरू महाराज का तुच्छ सा सेवक

जगजीत सिंह

कैसे बनी यह दुनिया

कैसे बनी यह दुनिया? किसने बनाए पेड़-पौधे और जीव? इसका सीधा जवाब होगा-ईश्वर ने। लेकिन भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग साधारण व्यक्ति नहीं है। उनकी नई किताब 'द ग्रैंड डिजाइन' में उन्होंने यह कह कर तहलका मचा दिया है कि दुनिया-वैज्ञानिक भाषा में ब्रह्मांड -को ईश्वर ने नहीं बनाया। बल्कि गुरूत्वाकर्षण जैसे भौतिकी के नियमों के कारण शून्य से हमारे इस विशाल संसार की रचना हुई है। इसी के बाद पूरी दुनिया में बहस छिड़ गई है कि ब्रह्मांड किसने बनाया। धर्म गुरू और वैज्ञानिक दोनों ही इस बारे में बराबर बंटे है। इसीलिए भास्कर ने कुछ प्रमुख वैज्ञानिकों और धर्म गुरूओं से जानना चाहा कि क्या हमारे संसार को ईश्वर ने बनाया या यह खुद पैदा हुआ?

मनुष्य को अपने विश्वास इतने प्रिय होते हैं कि साक्षात प्रमाण पाकर वह उन्हें छोड़ना नहीं चाहता।

दूसरा मनुष्य प्रकृति सुख अनुरागी है, जब विरोधी मत वाले विरोधता करते हैं तो वह उससे बचना चाहता है, और गोल मोल उत्तर देकर विपक्षियों से बचता है।

जब से विज्ञान ने उन्नति की है और यह खोज आरम्भ हुई कि हमारा ब्रह्मांड कैसे बना, तब से ही वैज्ञानियों वा धार्मिक जनों में टक्कर रही है। परन्तु यह साहस करना और ऐलान करना कि इस दुनियां को ईश्वर ने नहीं बनाया और न ही वह इसे चलाता है, यह विरले जनों का ही साहस हुआ है।

हम भाग्यशाली हैं कि परम पू० भगवान देवात्मा ने हम लोगों में इतना साहस भर दिया कि बेडर होकर हम विज्ञान के साथी हैं। पू० भगवान जो ईश्वार के अनन्य भक्त थे, परन्तु जब उन्हें विज्ञान की इन सचाईयों का ज्ञान हुआ तो कड़ी अलोचना वा विरोधता सहकर भी उन्होंने विज्ञान की ही सचाईयों पर अटल विश्वास किया। अपने झूठे विश्वासों को घोर से घोर दुख उठाकर भी छोड़ने पर मज़बूर हो गए।

जैसा कि ऊपर लिखा है कि भास्कर ने दोनों मतों के पक्षों के विचार रखे हैं। आजकल भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग बहुत चर्चित हैं। इसके विषय में डीन विलियमज़ ने इस प्रकार लिखा है।

मनुष्य के बनाए धर्म सबसे टिकाऊ वायदा अमरता का करते हैं। मरने के बाद या तो आप स्वर्ग मे रहेंगे या नर्क में। या फिर पुर्नजन्म लेकर दूसरे जन्म मे जीवित रहेंगे। जबकि विज्ञान ऐसा कोई दावा नहीं करता।

पिछले दिनों दुनिया भर के नास्तिकों में खुशी की लहर दौड़ गई। कारण यह दावा था कि भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग ने आखिरकार मान लिया है कि दुनिया भौतिकयशास्त्र के नियमों की वजह से बनी, न कि ईश्वर के हाथों। लेकिन अगर आप उनके शब्दों की गहराई में जाएं, तो पाएंगे कि उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व से इनकार नहीं किया, सिर्फ इतना कहा कि उसने दुनिया नहीं बनाई। इसके बावजूद हॉकिंग दुनिया भर के नास्तिकों

के लिए अहम क्यों हैं? वैज्ञानिक समुदाय, आम जन और धार्मिक प्रतिष्ठानों में उनकी खासी प्रतिष्ठा है। हमेशा लगता है कि हॉकिंग किसी भी क्षण ईश्वर की भर्त्सना कर सकते हैं, पर कभी करते नहीं। इससे नास्तिकों को खोझ होती है और ईश्वर को मानने वाले खुश होते है।

नास्तिकों की भौतिक विज्ञानियों से कभी बनी नहीं। आइंस्टीन ने यह कहने से मना कर दिया कि ईश्वर नहीं है। मृत्यु से कुछ महीनें पहले अपने जीवनी लेखक विलियम हरमंस को एक इंटरव्यू देकर उन्होंने मुसीबत मोल ले ली थी। उन्होंने कहा कि धार्मिक कर्मकांड में उनका यकीन नहीं, पर यह साबित नहीं किया जा सकता कि ईश्वर नहीं है। अब जब हॉकिंग भी ऐसा ही कर रहें हैं तो नास्तिकों को झटका लगा है। सही है कि दुनिया में नास्तिकतावादी आंदोलन धीमे-धीमे ही सही जोर पकड़ रहा है। आज एथीस्ट बस मूवमेंट हिचेंस की उग्र बहसें उसमें नई जान फूंक रही है। फिर भी उसे आधुनिक समय का एक कद्दावर व्यक्ति चाहिए और वह वैज्ञानिक हो।

सब जानते हैं कि मनुष्य अणुओं से बना है। मूलत: आप ऊर्जा का विशाल पुंज हैं। थर्मोडायनामिक्स के नियम कहते हैं कि ब्रह्मांड में ऊर्जा की मात्रा स्थिर है और ऊर्जा न पैदा की जा सकती है और न नष्ट। वह सिर्फ रूप बदलती है। यानी जब आप मरते हैं जब दर असल मरते नहीं, किसी और रूप में बदल जाते हैं। सवाल यह है कि हॉकिंग ने ईश्वर के अस्तित्व से इनकार क्यों नहीं किया। आइंस्टीन ने भी ऐसा क्यों नहीं किया था। क्या वे डर गए कि कहीं उनका भी गैलिलियों जैसा हश्र न हो? अब वह जमाना नही रहा जब मुख्य धारा से मेल न खाने वाले विचारों के कारण सूली पर लटका दिया जाता था।

(कुछ अंश भास्कर से)

महोत्सव निकट आ रहा है

पाठकगण यह जानकर खुशी अनुभव करेंगे कि परम पू० भगवान देवात्मा बानी देव धर्म और देव समाज का 160 वां मुबारक शुभ जन्म महोत्सव निकट आ रहा है। इस वर्ष यह पावन अवसर 20 दिसम्बर 2010 से 23 दिसम्बर 2010 तक पूरी धूमधाम और चाव भाव के साथ हर वर्ष की तरह माता शुभवती धर्मशाला सैक्टर 18 चण्डीगढ़ मनाया जाऐगा।

पाठकगण महोत्सव मुबारक की तिथियों कों नोट करके आने की जोश शोर से तैय्यारी करके धन्यवादी बनाएं।

प्रार्थी

मन्त्री देवधर्म

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़ 5 सितम्बर 9.30 बजे यहां ईतवार की सभा की गई। इसमें सभापति जी ने मनुष्य के भीतर उसकी परिचालक शक्तियों, घमंड, स्वार्थ, ईर्षा, द्वेष, मोह बन्धन आदि शक्तियां के विषय में ब्यान किया, जिनसे घर संसार दुखों का घर बना हुआ है। गुरू महाराज ने इन शक्तियों का ज्ञान दिया है, यह मुनुष्य के आत्मिक रोग हैं, जिनका निदान उच्च संगत में है।

कल्याण मल्का:- यहां श्रीमान बलबहादुर सिंह जी प्रति सप्ताह सभा करवाते हैं, जिसमें स्थानिएं सेवक वा श्रद्धावान शामिल होकर लाभ उठाते हैं।

5 सितम्बर की शाम को श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंचे। इसमें अच्छी संख्या में जन हाजिर थे। इसमें बताया गया कि इस संसार में जो उच्च योग्यताएं लेकर मनुष्य जन्म लेते हैं, वह युग पलट देते हैं। पू० भगवान ने भी इस संसार में नया इन्कलाब लाया है। सभापति जी ने बताया कि किस प्रकार उनकी नीच जीवन से रक्षा हुई है। इससे श्रोतागण नया जोश अनुभव कर रहे थे।

6 सितम्बर को 8.30 बजे सभा की गई। इसमें "तूं कर फिकर तेरा समय जा रहा है, समय कूच का जो निकट आ रहा है।" नामक भजन का गान किया। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य सुख स्वादों में इतना खो जाता है कि उसे मौत याद नहीं रहती। मनुष्य अच्छी संगत ही यह याद करवाती है और उस पर हित के कामों में उसे अपनी रक्षा नज़र आती है। पर हित करना जीवन है, बाकी पशु जीवन है।

रात 8 बजे 00एक सभा की गई। इसमें कई नये मास्टर भी आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है, इसको सफल करना चाहिए। हमारे वजूद में शरीर, दिमाग़ वा आत्मा हैं।

2) इन सबका विकास करना है, तभी जीवन सफल होता है। विकास के नियम बताए। आत्मा की मिथ्या और पाप से रक्षा करनी है। नीच बन्धनों से मुक्त होना है। धन, स्वार्थ, मोह, मान, सम्मान, बड़ाई से मुक्त होना है। दूसरों के काम आना हैं, तभी हमारी योग्यता के अनुसार हमारा विकास है और जीवन सफल हो सकता है।

7 सितम्बर सुबह 8.30 बजे सभा की गई। प्रार्थना के बाद "शरण तुमरी में आया हूं, बचाओ मुझको हे सत्गुरू" नामक भजन गाया गया। सभा में बताया गया कि हम सब अपने आपको ठीक ही समझते हैं, उसमें सुधार की अवश्यकता अनुभव नहीं करते। जैसे पानी में डूबता मनुष्य बचाने के लिए पुकारता है, उसी पुकार नीच जीवन से बचाने की पुकार नहीं उठती। हमें अपने भीतर के दुश्मन दिखाई नहीं देते। चारों तरफ नीच गतियों की भरमार है, हम अपनी हानिकारक रुचियां दिखाई नहीं देती, भगवान देवात्मा परम हितकर्ता हैं, वह हमें अपनी नीचता दिखाते हैं। फिर साधू जानकी दास जी, सरदार गुरूमुख सिंह जी आदि के उदाहरण दिए गए, कैसे वह नीच जीवन से बचे। यह दर ही नीचता से बचाता है।

गोनियाना भण्डी:- शाम को 8 बजे यहां सभा रखी गई, इसमें शामिल होने के लिए महमा सवाई से गुरूदेव सिंह जी मान, उनका बेटा और एक सरपंच साहिब आए। नीच जीवन की हानियों के बारे में बताया गया। किस प्रकार एक एक जन को पू० भगवान ने उसका नीच जीवन दिखाया और अपनी शक्ति से उससे मुक्ति दी हैं, इसके उदाहरण दिए गए।

8.9.2010 सुबह की सभा में महिला सवाई से मुख्तियार सिंह जी भी आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया गुरू महाराज विकास क्रम में नई योग्यताएँ, नई रोशनी और नई अद्भुत बरकतें लेकर प्रगट हुए हैं। किसी ईष्ट देवी, देवता को

केवल अराधना धर्म नहीं। अच्छा बनना, हितकर बनना, सेवाकारी बनना धर्म है। बेजान जगत, पशु जगत, वनस्पति जगत और मनुष्यों के प्रति नेक व्यवहार धर्म हैं। अपने उपकारियों के प्रति सम्मान, श्रद्धा और सेवा द्वारा ही धर्म आता है। परिवर्तन की उदाहरणें बताई गई।

रात 8 बजे एक सभा की गई। महिमा सवाई से हरिन्द्र सिंह जी और एक साथी के साथ आकर शामिल हुए। कई और नये जन भी आए थे। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका अपना आप है। बहुत सारी उदाहरणों द्वारा यह बात साफ की गई। गुरू महाराज हमारे दुश्मनों को दिखाते हैं जो हमारे भीतर हैं। उनसे बचाने की भी पूर्ण क्षमता रखते हैं। कोई भी और संसार में यह काम नहीं कर रहा।

9 सितम्बर सुबह 8 बजे फिर एक सभा की गई। सभापति जी ने इस सभा में गुरू महाराज की शरण में आने की बरकतों पर जोर दिया। कई उदाहरणें पेश की और हाजरीन को प्रेरणा की कि गुरू के दरबार से जुड़े रहने की अवश्यकता है। 270 रू० दान में प्राप्त हुए।

थराजवाला शाम को श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंच गए। 5.30 बजे शाम को यहां सभा हुई। इस सभा में बताया गया कि शारीरिक रोगो का बड़ी देर के बाद पता लगा। आज भी कैंसर, एडज़ आदि का पूरा ईलाज नहीं मिला। पू० भगवान ने आत्मा के रोग बताए है। इन रोगों से मनुष्य के शरीर और आत्मा दोनों का नाश होता है। गुरू महाराज ने किस प्रकार आत्मा के रोगियों को बचाया है। इस सम्बन्ध में कई घटनाएं पेश की। इस सभा से हाज़रीन को बहुत उत्साह मिल रहा था।

10 सितम्बर सुबह एक सभा रखी गई। इस सभा कें बताया गया कि नीच सुखों के ईश्क मनुष्य के सब के से बड़े शत्रु हैं। नीच रागों की भयानकता बताई। नीच सुखों को बढ़ाना जीवन बर्बाद करना है। ऐसे बर्बाद मनुष्यों को गुरू महाराज ने बचाने का बीड़ा उठाया है। उसका बहुत सुन्दर बयान किया। किस प्रकार नीच सुख अनुरागी जनों को बचाया और उन्हें उच्च बनाने का काम किया 200 रू० दान प्राप्त हुए।

11 बजे के बाद श्रीमान तेज सिंह जी के घर उनके जोर देने पर सभा रखी गई। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य अपने चौतरफा समानों का कैदी है। जैसे चौतरफा लोग करते हैं, वह उसी रूप में ढल जाते हें। ऐसी बहुत सी उदाहरणें पेश की। देव समाज का वातावरण बहुत कीमती है। इसमें आकर नीच वातावरण से बचने का अवसर मिलता है। गुरू महाराज के प्रभाव ऐसा वातावरण पैदा करते हैं, इसका ब्यान सभापति जी ने श्रद्धापूर्वक किया। 6 सौ रू० दान में मिले और बहुत उत्साह प्रद वातावरण बना।

यह सारा प्रोग्राम किसी अंश बहुत हित कर रहा। 2 बजे यहां से चलकर श्रीमान जी चण्डीगढ़ पहुंचे।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts